SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 2nd year **SESSION** – 19-21

SUBJECT - Understanding the self (EPC-4)

TOPIC NAME – शिक्षक की अस्मिता

DATE - 25.06.21

⇒ शिक्षक की अस्मिता –

पिछले साठ सालों के शैक्षिक प्रयासों में हम यह पाते हैं कि अध्यापक के महत्व के ऊपर बहुत कुछ कहा जाता रहा है। परन्तु वास्तविक स्थिति की विश्लेषित करें तो यह कहा जा सकता है कि इस ओर विशेष ध्यान कभी भी नहीं दिया गया। इसके विपरीत कई प्रयासों के माध्यम से अध्यापक के पेशे की अवमूल्यन (बहिष्कार) ही किया जाता रहा है। सरकारी तंत्र द्वारा अपूर्ण योग्यता वाले अध्यापकों को विद्यालय में नियुक्ति करने अथवा समाज द्वारा अध्यापक के पेशे को निम्न स्तर का समझना, दोनों ही प्रकार से अध्यापक की उपेक्षा होती रही है। आज के औद्योगिक समाज में अध्यापक की भूमिका एक 'उत्पादक' के रूप में बनती जा रही है। जो अपने विद्यार्थी को अपेक्षित ज्ञान मात्र सिखाता है।

आधुनिक शैक्षिक प्रणाली को देखा जाये तो प्रत्यक्ष रूप से राज्य शिक्षा व्यवस्था को नियंत्रित करता है। एक पुस्तक से लेकर एक शिक्षायी संस्थान तक के विभिन्न तत्वों का निर्धारण राज्य के मानदण्डों के आधार पर होता है। अतः कोई

अध्यापक बन सकता है, यह विषय राज्य के अधिन है। यहाँ तक कि राज्य के निर्देश पर एक अध्यापक अपना मूल कार्य छोड़कर विद्यालय से हटकर अन्य कार्यों जैसे- मतगणना, जनगणना, पशुगणना, पोलियो-उन्मूलन, चुनाव कार्य आदि में लगा जाता है। इस प्रकार देखें तो एक अध्यापक के अपनी मौलिक अस्मिता कम होती जा रही है। यदि हमें एक विकसित शैक्षिक व्यवस्था का निर्माण करना है तो एक अध्यापक की अस्मिता पर विशेष बल देना होगा।

अध्यापक शिक्षा एवं विद्यालयी व्यवस्था पर नजर डाले तो स्पष्ट होगा कि हमने 'अध्यापक अस्मिता' का अर्थ अति सीमित किया गया है। हमने उसकी अस्मिता को मात्र उसके पेशे से जोड़ कर देखा है न कि समग्र रूप में। वस्तुतः उसके सीमित अस्मिता को विकसित करने के कई तरीके हमारी शिक्षायी व्यवस्था में कार्यरत रहे हैं, पर बदलते समय में उन तरीकों में भी कोई व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ।

अध्यापक अस्मिता के संदर्भ में एक सीमित सोच यह है कि उसके विद्यालयी कार्य बोझ को बढ़ाया जा सकता है। अर्थात् विद्यालय में एक अध्यापक के ऊपर जितना अधिक कार्य का बोझ दिया जायेगा वह उतने उतना ही अधिक सिखेगा।

⇒ शिक्षकों की अस्मिता पर समकालीन विमर्श —

प्राचीन भारत निश्चित रूप से ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में समकालीन विश्व में अग्रणी था। लेकिन भारतीय स्वतंत्रता के लगभग सात दशकों के बाद भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अपना अभीष्ट स्थान सुनिश्चित नहीं कर पाया है। आज तक लगभग स्वतंत्रता के लगभग सात दशक के बाद भी विश्व के शीर्ष विश्वविद्यालय के गुणानुक्रम में भारतीय विश्वविद्यालय स्थान नहीं पा सके हैं। भारत को शक्ति, सम्पत्ति और संस्कृति के दृष्टिकोण से वैश्विक धुरी बनाना होगा, जो केवल सशक्त शिक्षा व्यवस्था से ही संभव है।

आज स्थिति यह है कि शिक्षक भारत में शिक्षा एवं शिक्षण परिस्थितियों को प्रभावित करने के स्थान पर स्वयं परिस्थितियों के दास बने हुए हैं। शिक्षा व्यवस्था की स्थिति राजनैतिक और आर्थिक तंत्र के यंत्रों की तरह है। इसका परिणाम यह हुआ कि आज सभी शिक्षकों को ही शिक्षित करने में लगे हुए हैं। और शिक्षक समेत पुरी शिक्षा व्यवस्था ही भ्रमजाल में फस गई है।

शिक्षक वर्ग अपने आचरण से विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा। इसके लिए आवश्यक है कि समाज अपना अधिकतम संसाधन शिक्षा पर निवेश करे। नहीं भूलना चाहिए कि समाज, राष्ट्र, और मानवता के मूल्य विद्यार्थी में निर्मित होते हैं।

यह भी आवश्यक है कि शिक्षा संस्थानों की सहकारिता के माध्यम से भी चलाया जाए। भारत की शिक्षा व्यवस्था का अन्तर्राष्ट्रीयकरण आवश्यक है। देश के शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों का अध्ययन तथा प्रशिक्षण हेतु विदेशी विश्वविद्यालयों में भेजे जाने चाहिए। इसके साथ ही भारतीय छात्रों को विदेशों में पढ़ने के लिए प्रोत्साहन और सहायता दी जानी चाहिए।

शिक्षण की सबसे बड़ी आवश्यकता है, शिक्षक का सीखने के लिए तैयार एवं तत्पर रहना। यह सीखना विषयवस्तु अथवा संबंधित सूचनाओं तक सीमित नहीं है। शिक्षक से यह भी अपेक्षित है कि वे अपने आस-पास हो रहे परिवर्तनों, शिक्षा संबंधी सरकारी नीतियों, तकनीकी विकास आदि को जानने के प्रति सजग रहें।

आवश्यकता है कि वर्तमान की आवश्यकता एवं भविष्य की चुनौतियों को समझकर शिक्षक स्वयं में वांछित क्षमताओं को विकसित करते रहे ताकि वह अपने वृत्ति (Profession) के साथ पूर्ण आनन्द लेते हुए न्याय कर सके और गर्व कर सके।